Siddhanta's International Journal of
Advanced Research in Arts & Humanities
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Impact Factor : 5.9, ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 6(1), July-August 2024
(Role of Bengal in Freedom Struggle of India - Special Issue)
Available online : https://sijarah.com/

महर्षि अरविंदो का स्वाधीनता आंदोलन में योगदान (पश्चिम बंगाल के विशेष संदर्भ में)

डॉ. सीताराम आठिया

एम ए:- राजनीति शास्त्र, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, प्राचीन भारतीय इतिहास, मानद पीएचडी (डीएसडब्ल्यू), विद्या वाचस्पति सम्मान समकक्ष मानद डॉक्टरेट, मानद डी लिट (स्वास्थ्य)

निवास देवरी जिला सागर, मप्र, ईमेल आईडी- srathiya.deori@gmail.com

सारांश

महर्षि अरविंद एक महान योगी और दार्शनिक थे, पूरे विश्व में उनके दर्शनशास्त्र का बहुत प्रभाव रहा है। उनका जन्म कोलकाता में एक संपन्न परिवार में हुआ था। उनके चिकित्सक पिता अंग्रेजों के बहुत बड़े प्रशंसक थे। महर्षि अरविंद ने वेद, उपनिषद आदि ग्रंथों पर टीका एवम योग साधना पर मौलिक ग्रंथ लिखे। उन्होंने विशेष रूप से डार्विन जैसे जीव वैज्ञानिकों के सिद्धांत से आगे चेतना के विकास की एक कहानी लिखी और समझाया कि किस तरह धरती पर जीवन का विकास हुआ। उनकी प्रमुख कृतियां लेटर्स ऑन योगा, सावित्री, योग समन्वय, दिव्य जीवन, फ्यूचर पोयट्री और द मदर हैं। महर्षि अरविंद बंगाल के महान क्रांतिकारियों में से एक थे, आध्यात्मिक क्रांति की शुरुआत इन्होंने ही की थी। इन्हीं के आह्वान पर हजारों बंगाली युवकों ने देश की स्वतंत्रता के लिए हंसते-हंसते फांसी के फंदों को चूम लिया था। सशस्त्र क्रांति के पीछे इनकी ही प्रेरणा थी। अरविंद ने कहा था कि चाहे सरकार क्रांतिकारियों को जेल में बंद करे, फांसी दे या यातनाएं दे, पर हम यह सब सहन करेंगे और यह स्वतंत्रता का आंदोलन कभी रुकेगा नहीं। एक दिन अवश्य आएगा, जब अंग्रेजों को हिन्दुस्तान छोड़कर जाना होगा। और वह एक दिन आ ही गया, 15 अगस्त 1947 को महर्षि अरविंद जी के जन्मदिवस पर ही भारत को आजादी मिली। महर्षि अरविंद पहले एक क्रांतिकारी नेता थे किंतु बाद में वह आध्यात्म की ओर मुड़ गए क्योंकि उन्होंने यह जान लिया था कि आध्यात्मिक उत्थान के बगैर भारत की स्वतंत्रता के कोई मायने नहीं। इसीलिए उन्होंने भारत को आध्यात्मिक रूप से एक करने के लिए भारतीय ज्ञान की पताका विश्व भर में फैलाई ताकि भारतीयों में अपने ज्ञान के प्रति गौरव-बोध

Siddhanta's International Journal of
Advanced Research in Arts & Humanities
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Impact Factor : 5.9, ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 6(1), July-August 2024
(Role of Bengal in Freedom Struggle of India - Special Issue)
Available online : https://sijarah.com/

जाग्रत हो। गौरव-बोध के बगैर आजादी और स्वतंत्रता की अलख जगाना मुश्किल था। हमें अपने धर्म और ज्ञान पर गौरव होना चाहिए। यह गौरव-बोध तब आता है, जब हम वेद, उपनिषद और गीता को पढ़ेंगे। महर्षि अरविंद ने गीता और अवतारवाद के विज्ञान को भी समझाया।

मुख्य शब्द

महर्षि, योगी, दार्शनिक, आध्यात्म, योगा, सावित्री, अवतारवाद, द लाइफ डिवाइन, उत्तरपाड़ा।

प्रस्तावना

जीवन परिचय - महर्षि अरबिंदो घोष का जन्म 15 अगस्त 1872 को पश्चिम बंगाल के कोलकाता में भारत के एक सम्पन्न परिवार में हुआ था। उनके पिता डॉ कृष्णधन घोष और माता का नाम स्वर्णलता देवी था। इनके चिकित्सक पिता पश्चिमी सभ्यता में रंगे हुए एवम अंग्रेजो के प्रशंसक थे। इनके पिता जी चाहते थे कि उनके बच्चों पर भारतीयता का प्रभाव ना पड़े।अरविंद को भारतीय एवं यूरोपीय दर्शन और संस्कृति का अच्छा ज्ञान था और उन्होंने इन दोनों के समन्वय हेतु उल्लेखनीय प्रयास किए। उनके दर्शन में जीवन के सभी पहलुओं यथा संस्कृति, राष्ट्रवाद, राजनीति, समाजवाद, साहित्य आदि का समावेश है।

शिक्षा

अरबिंदो घोष की प्रारंभिक शिक्षा दार्जिलिंग के एक विदेशी ईसाई कॉन्वेंट स्कूल में प्रारम्भ हुई और सात वर्ष की आयु में ही उन्हें आगे की स्कूली शिक्षा हेतु इंग्लैण्ड भेज दिया गया। उन्होंने कैंब्रिज विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया और तीन आधुनिक यूरोपीए भाषाओं के कुशल ज्ञाता बने। 14 वर्ष श्री अरविंद इंग्लैंड में रहे जहां उनकी भेंट बड़ौदा नरेश से हुई, जो अरबिंदो की योग्यता देखकर बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने उन्हे अपना निज सचिव नियुक्त कर लिया। 21 वर्ष की आयु में वह भारत लौटते ही भारतीय भाषाओं और सांस्कृतिक परंपराओं पर गहरी समझ विकसित करने में जुट गए। अपनी स्वतंत्र विचारधारा के कारण कुछ समय बाद उन्होंने नौकरी छोड़ दी और बड़ौदा एवम कोलकाता में प्राध्यापक, वाइस प्रिंसीपल सहित

Siddhanta's International Journal of
Advanced Research in Arts & Humanities
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Impact Factor : 5.9, ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 6(1), July-August 2024
(Role of Bengal in Freedom Struggle of India - Special Issue)
Available online : https://sijarah.com/

विभिन्न प्रशासनिक पदों पर कार्य किया। बाद में उन्होंने अपनी देशज संस्कृति की ओर ध्यान दिया और पुरातन संस्कृत सहित भारतीय भाषाओं तथा योग का गहन अध्ययन प्रारम्भ कर दिया।

महर्षि अरविन्द का शिक्षा दर्शन

महर्षि अरविन्द ने भारतीय शिक्षा चिन्तन में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने सर्वप्रथम घोषणा की कि मानव सांसारिक जीवन में भी दैवीय शक्ति प्राप्त कर सकता है। वह मानते थे कि मानव भौतिक जीवन व्यतीत करते हुए तथा अन्य मानवों की सेवा करते हुए अपने मानस को 'अति मानस' तथा स्वयं को 'अति मानव' में परिवर्तित कर सकता है और शिक्षा द्वारा यह संभव है। आज की परिस्थितियों में जब हम अपनी प्राचीन सभ्यता, संस्कृति एवं परम्परा को भूल कर भौतिकवादी सभ्यता का अंधानुकरण कर रहे हैं, अरविन्द का शिक्षा दर्शन हमें सही दिशा- निर्देश करता हैं। आज धार्मिक एवं अध्यात्मिक जागृति की नितान्त आवश्यकता है।

शैक्षिक प्रयोग

राष्ट्रीय आन्दोलन से जुड़े विद्यार्थियों को शैक्षिक सुविधाएं प्रदान करने हेतु कलकत्ता में एक राष्ट्रीय महाविद्यालय स्थापित किया गया। अरविन्द को १५० रु प्रति माह के वेतन पर इस कॉलेज का प्रधानाचार्य नियुक्त किया गया। इस अवसर का लाभ उठाते हुए उन्होंने 'राष्ट्रीय शिक्षा' की संकल्पना का विकास किया तथा अपने शिक्षा-दर्शन की आधारशिला रखी। यही कॉलेज आगे चलकर जादवपुर विश्वविद्यालय के रूप में विकसित हुआ। प्रधानाचार्य का कार्य करते हुए अरविन्द अपने लेखन तथा भाषणों द्वारा देशवासियों को प्रेरणा देते हुए राजनैतिक गतिविधियों में भाग लेते रहे।

१९०८ ई में राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेने के कारण अरविन्द गिरफ्तार हुए व जेल में रहे। उन पर मुकदमा चलाया गया तथा अदालत में दैवयोग से उनके मुकदमे की सुनवाई सैशन जज सी पी बीचक्राफ्ट ने की जो अरविन्द के आईसीएस के सहपाठी रह चुके थे तथा अरविन्द की कुशाग्र बुद्धि से बहुत प्रभावित थे। अरविन्द के वकील चितरंजन दास ने जज बीचक्राफ्ट से कहा- "जब आप अरविन्द की बुद्धि से प्रभावित हैं,

Siddhanta's International Journal of
Advanced Research in Arts & Humanities
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Impact Factor : 5.9, ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 6(1), July-August 2024
(Role of Bengal in Freedom Struggle of India - Special Issue)
Available online : https://sijarah.com/

तो यह कैसे संभव है कि अरविन्द किसी षडयन्त्र में भाग ले सकते हैं?" तब बीच क्राफ्ट ने अरविन्द को जेल से मुक्त कर दिया।

अरविन्द की शिक्षा पद्धति की संकल्पना-

अरविन्द ऐसी शिक्षा पद्धति चाहते थे, जो विद्यार्थी के ज्ञान-क्षेत्र का विस्तार करे, जो विद्यार्थियों की स्मृति, निर्णयन शक्ति एवं सर्जनात्मक क्षमता का विकास करे तथा जिसका माध्यम मातृभाषा हो। श्री अरविन्द राष्ट्रवादी विचारक थे, अतः वे शिक्षा-पद्धति को भारतीय परम्परानुसार ढालना चाहते थे। उन्होंने शिक्षा द्वारा पुनर्जागरण का संदेश दिया था। उनका यह पुनर्जागरण तीन दिशाओं की ओर उन्मुख होना चाहिए:-

(1) प्राचीन आध्यात्म-ज्ञान की पुर्नस्थापना;

(2) इस आध्यात्म-ज्ञान का दर्शन, साहित्य, कला, विज्ञान व विवेचनात्मक ज्ञान में प्रयोग;

(3) वर्तमान समस्याओं का भारतीय आत्म-ज्ञान की दृष्टि से समाधान की खोज तथा आध्यात्म प्रधान समाज की स्थापना।

शिक्षा के लक्ष्य

अरविंद के अनुसार "शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य विकासशील आत्मा के सर्वांगीण विकास में सहायक होना तथा उसे उच्च आदर्शों के लिए प्रयोग हेतु सक्षम बनाना हैं।" अरविंद की धारणा थी कि शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति में यह विश्वास जागृत करना है कि वह मानसिक तथा आत्मिक दृष्टि से पूर्ण सक्षम है और वह शनैः शनैः अति मानव की स्थिति में आ रहा है। शिक्षा द्वारा व्यक्ति की अन्तर्निहित बौद्धिक एवं नैतिक क्षमताओं का सर्वोच्च विकास होना चाहिए।अरविंद का विश्वास था कि मानव दैवीय शक्ति से समन्वित है और शिक्षा का लक्ष्य इस चेतना शक्ति का विकास करना है। अतः शिक्षा का लक्ष्य मानव-व्यक्तित्व के समेकित विकास हेतु अतिमानस का उपयोग करना है।"

पाठ्यक्रम

Siddhanta's International Journal of
Advanced Research in Arts & Humanities
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Impact Factor : 5.9, ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 6(1), July-August 2024
(Role of Bengal in Freedom Struggle of India - Special Issue)
Available online : https://sijarah.com/

श्री अरविंद शिक्षा का ऐसा पाठ्यक्रम चाहते थे, जिसमे अनेक विषयों के सतही ज्ञान के स्थान पर विद्यार्थियों को कुछ चयनित विषयों का ही गहन अध्ययन कराया जाये। वे भारतीय इतिहास एवं संस्कृति को पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग मानते थे, क्योंकि उनका विचार था कि प्रत्येक बालक में इतिहास बोध होता है जो परी कथाओं, खेल व खिलौनों के माध्यम से प्रकट होता है। अतः बालकों की अभिरुचि अपने देश के साहित्य एवं इतिहास के प्रति विकसित करनी चाहिए।

नैतिक शिक्षा

अरविन्द बालकों के बौद्धिक विकास के साथ उनका नैतिक एवं धार्मिक विकास भी करना चाहते थे। उनकी धारणा थी- "मानव की मानसिक प्रवृत्ति नैतिक प्रवृति पर आधारित है। बौद्धिक शिक्षा, जो नैतिक व भावनात्मक प्रगति से रहित हो, मानव के लिए हानिकारक है।" नैतिक शिक्षा हेतु अरविन्द गुरु की प्राचीन भारतीय परंपरा के पक्षधर थे जिसमें गुरु, शिष्य का मित्र, पथ प्रदर्शक तथा सहायक हो सकता था। अनुशासन द्वारा ही विद्यार्थियों में अच्छी आदतों का निर्माण हो सकता है।

योग एवम साधना

जेल की अवधि में अरविन्द ने आध्यात्मिक साधना की तथा उन्हें ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त हुआ। इसके पूर्व वे 1907 में जब बड़ौदा में थे तो एक प्रसिद्ध योगी विष्णु भास्कर लेले के संपर्क में आये और योग-साधना में प्रवृत्त हुए। जेल से मुक्त होकर वे 4 अप्रैल 1910 को पांडिचेरी चले गये और उन्होंने अपना जीवन अनन्त सत्य की खोज में लगा दिया। सतत् साधना द्वारा उन्होंने अपनी आध्यामिक दार्शनिक विचारधारा का विकास किया।

अरविन्द की दार्शनिक विचारधारा

अरविन्द के दर्शन का लक्ष्य "उदात्त सत्य का ज्ञान" था, जो "समग्र जीवन- दृष्टि" द्वारा प्राप्त होता है। समग्र जीवन-दृष्टि मानव के ब्रह्म में लीन या एकाकार होने पर विकसित होती है। ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण द्वारा मानव विशेष बन जाता है अर्थात् वह सत, रज व तम की प्रवृत्ति से ऊपर उठकर ज्ञानी बन जाता है।

Siddhanta's International Journal of
Advanced Research in Arts & Humanities
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Impact Factor : 5.9, ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 6(1), July-August 2024
(Role of Bengal in Freedom Struggle of India - Special Issue)
Available online : https://sijarah.com/

अतिमानव की स्थिति में व्यक्ति सभी प्राणियों को अपना ही रूप समझता है। जब व्यक्ति शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक दृष्टि से एकाकार हो जाता है तो उसमें दैवीय शक्ति का प्रादुर्भाव होता है।

समग्र जीवन-दृष्टि हेतु अरविन्द ने योगाभ्यास पर अधिक बल दिया है। योग द्वारा मानसिक शांति एवं संतोष प्राप्त होता है। अरविन्द की दृष्टि में योग का अर्थ जीवन को त्यागना नहीं है, बल्कि दैवीय शक्ति पर विश्वास रखते हुए जीवन की समस्याओं एवं चुनौतियों का साहस से सामना करना है। अरविन्द की दृष्टि में योग कठिन आसन व प्राणायाम का अभ्यास करना भी नहीं है, बल्कि ईश्वर के प्रति निष्काम भाव से आत्म समर्पण करना तथा मानसिक शिक्षा द्वारा स्वयं को दैवीय स्वरूप में परिणित करना भी है।

साहित्यिक योगदान

अरविंद के दर्शन को भी वेदान्त के परिप्रेक्ष्य में ही समझा जा सकता है। स्वानुभूति के अतिरिक्त वेद, उपनिषद और पुराण वस्तुतः उनके दर्शन के स्रोत हैं। उनका दर्शन सर्व स्वीकृति का वर्णन है। उनके अनुसार विश्वातीत सत्य की स्वीकृति में ही विश्व और व्यक्ति की सत्यता भी अंतर्निहित है। वे दार्शनिक और विचारक होने के साथ-साथ योगी भी हैं। उनका दर्शन और योग जीवन की दिव्यता पर बल देता है। अरबिंदो घोष की वृहद और जटिल साहित्यिक कृतियों में दार्शनिक चिंतन, कविता, नाटक और अन्य लेख सम्मिलित हैं। उनकी कृतियाँ निम्नलिखित हैं-

* द मदर

* लेटर्स ऑन योगा

* सावित्री

* योग समन्वय

* दिव्य जीवन

* फ्यूचर पोयट्री

Siddhanta's International Journal of
Advanced Research in Arts & Humanities
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Impact Factor : 5.9, ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 6(1), July-August 2024
(Role of Bengal in Freedom Struggle of India - Special Issue)
Available online : https://sijarah.com/

* योगिक साधन

* "वंदे मातरम"

* कारा काहिनी (जेलकथा)

* धर्म ओ जातीयता (धर्म और राष्ट्रीयता)

* अरबिन्देर पत्र (अरविन्द के पत्र)

हिंदी के मुख्य ग्रन्थ

* दिव्य जीवन

* सावित्री (पद्यानुवाद)

* योग-समन्वय

* श्रीअरविन्द अपने विषय में

* माता

* भारतीय संस्कृति के आधार

* वेद-रहस्य

* केन एवं अन्यान्य उपनिषद्

* ईशोपनिषद

* गीता-प्रबंध

सम्पूर्ण संस्करण

Siddhanta's International Journal of
Advanced Research in Arts & Humanities
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Impact Factor : 5.9, ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 6(1), July-August 2024
(Role of Bengal in Freedom Struggle of India - Special Issue)
Available online : https://sijarah.com/

श्री अरविन्द घोष की 125 वीं जयन्ती के अवसर पर 1997 में श्री अरबिंदो आश्रम ने श्री अरविन्द की सम्पूर्ण कृतियों को 37 भागों में प्रकाशित किया है।

राजनीतिक गतिविधियाँ

1902 से 1910 का समय श्री अरविंदो ले लिए काफी हलचल भरा था, क्योंकि उन्होंने ब्रिटिश शासन से भारत को मुक्त कराने का बीड़ा उठाया था। बड़ौदा कॉलेज की नौकरी छोड़कर वह कोलकाता चले गए और कोलकाता के 'नेशनल कॉलेज' के प्रिंसीपल बने। इस समय तक उन्होंने 'सादा जीवन और उच्च विचार' जीवन अपना लिया। उन पर रामकृष्ण परमहंस और स्वामी विवेकानंद के साहित्य का बहुत गहन प्रभाव पड़ा। सन् 1905 में लॉर्ड कर्ज़न ने पूर्वी बंगाल और पश्चिमी बंगाल का विभाजन कर दिया ताकि हिन्दू और मुस्लिमों में फूट पड़ सके। इस बंग-भंग के कारण बंगाल में जन जन में बहुत आक्रोश फैल गया।

स्वाधीनता आंदोलन में योगदान

श्री अरविंद को कोलकाता में उनके भाई बारिन ने बाघा जतिन, जतिन बनर्जी और सुरेन्द्रनाथ टैगोर जैसे क्रांतिकारियों से मिलवाया। उन्होंने 1902 में उनशीलन समिति ऑफ कलकत्ता की स्थापना में मदद की। उन्होंने लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के साथ कांग्रेस के गरमपंथी धड़े की विचारधारा को बढ़ावा दिया।

सन् 1906 में जब बंग-भंग का आंदोलन चल रहा था तो उन्होंने बड़ौदा से कलकत्ता की ओर प्रस्थान किया। रवीन्द्रनाथ ठाकुर और अरबिंदो घोष ने इस जन आंदोलन का नेतृत्व किया। इस आंदोलन के विषय में लोकमान्य तिलक ने कहा - बंगाल पर किया गया यह अंग्रेज़ों का प्रहार सम्पूर्ण राष्ट्र पर प्रहार है। अरबिंदो घोष ने राष्ट्रीयता की भावना जाग्रत करने तथा अंग्रेज़ों का विरोध प्रदर्शित करने के लिए पत्र - पत्रिकाओं में विचारोत्तेजक और प्रभावशाली लेख लिखे। उनके लेखों से जन जन में जागृति आई। ब्रिटिश सरकार उनके इस क्रिया - कलापों से चिंतित हो गई। सरकार ने "अलीपुर बम कांड" के अंतर्गत उन्हें जेल भेज दिया। जेल में उन्हें योग पर चिंतन करने का समय मिला। उन्होंने सन् 1907 में राष्ट्रीयता के साथ भारत को "भारत माता" के रूप में वर्णित और प्रतिष्ठित किया। उन्होंने बंगाल में "क्रांतिकारी दल" नाम से संगठन का निर्माण

Siddhanta's International Journal of
Advanced Research in Arts & Humanities
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Impact Factor : 5.9, ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 6(1), July-August 2024
(Role of Bengal in Freedom Struggle of India - Special Issue)
Available online : https://sijarah.com/

किया और उसके प्रचार प्रसार हेतु अनेक शाखाएं खोली और वह स्वयं उसके प्रधान संचालक बने रहे। खुदीराम बोस और कनाईलाल दत्त, यह क्रांतिकारी उनके संगठन के ही क्रांतिकारी थे। इन गतिविधियों के कारण अरबिंदो घोष अधिक दिनों तक सरकार की नज़रों से छिपे नहीं रह सके। वह अपनी राजनीतिक गतिविधियों और क्रान्तिकारी साहित्यिक प्रयासों के लिए 1908 में बन्दी बना लिए गए। 1906 से 1909 तक सिर्फ़ तीन वर्ष प्रत्यक्ष राजनीति में रहे। इसी अवधि में वह पूरे देश के प्रिय बन गए। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस लिखते है- जब मैं 1913 में कलकत्ता आया, अरबिंदो तब तक किंवदंती पुरुष हो चुके थे। जिस आनंद तथा उत्साह के साथ लोग उनकी चर्चा करते शायद ही किसी की वैसे करते। 1908-09 में उन पर अलीपुर बमकांड मामले में राजद्रोह का मुकदमा चला जिसके फलस्वरूप अंग्रेज सरकार ने उन्हें जेल की सजा सुना दी। जब सजा के लिए उन्हें अलीपुर जेल में रखा गया तो जेल में अरविंद का जीवन ही बदल गया। वे जेल की कोठरी में उन्होंने ज्यादा से ज्यादा समय तप और साधना में लगाने लगे। वे गीता पढ़ा करते और भगवान श्रीकृष्ण की आराधना किया करते। ऐसा कहा जाता है कि अरविंद जब अलीपुर जेल में थे, तब उन्हें साधना के दौरान भगवान श्रीकृष्ण के दर्शन हुए। इस दिव्य अनुभूति के बाद कृष्ण की प्रेरणा से वे क्रांतिकारी आंदोलन छोड़कर योग और अध्यात्म में रम गए। जेल से बाहर आने के बाद वह किसी भी आंदोलन में भाग लेने के इच्छुक नहीं थे। अरविंद गुप्त रूप से पांडिचेरी चले गए। वहीं पर रहते हुए अरविंद ने योग द्वारा सिद्धि प्राप्त की और आज के वैज्ञानिकों को बता दिया कि इस जगत को चलाने के लिए एक अन्य जगत और भी है। उन्होंने वहाँ पर आध्यात्मिक विकास के लिए अन्तर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक केन्द्र के रूप में एक आश्रम की स्थापना की, जिसकी ओर पूरे विश्व के छात्र आकर्षित हुए।

ऐतिहासिक उत्तरपाड़ा अभिभाषण

अलीपुर जेल से छूटने के बाद 30 मई 1909 को उत्तरपाड़ा, पश्चिम बंगाल में एक संवर्धन सभा हुई, जिसमे श्री अरविंदो का प्रभावशाली व्याख्यान हुआ, जो इतिहास में उत्तरपाडा अभिभाषण के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इसमें उन्होंने बताया है कि सच्चा हिन्दू धर्म, सच्चा सनातन धर्म क्या है? और आज के संसार को उसकी

Siddhanta's International Journal of
Advanced Research in Arts & Humanities
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Impact Factor : 5.9, ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 6(1), July-August 2024
(Role of Bengal in Freedom Struggle of India - Special Issue)
Available online : https://sijarah.com/

क्यों जरूरत है! उनका यह भाषण उनके जीवन में एक नया मोड़ का परिचय देता है। इस भाषण में उन्होंने धर्म एवं राष्ट्र विषयक कारावास- अनुभूति का विशद विवेचन करते हुए कहा था :

"मुझसे जब इस सभा में कुछ कहने के लिए अनुरोध किया गया था तब मुझ को हिन्दूधर्म पर कुछ कहने की इच्छा हुई थी। किन्तु अब मैं बता नहीं सकता कि उस विषय में कुछ कहूँगा कि नहीं, क्योंकि यहाँ मेरे जी में कुछ और ही बात कहने की तरंग उठ रही है। वह बात कारागार में रहते समय मुझसे कही जाती थी। वही बात मुझे सम्पूर्ण भारतीय जाति से कहनी है। वस्तुतः उसी बात को अपनी जाति से कहने के लिये मैं कारागार से छूटकर आया हूँ।वर्षभर से कुछ अधिक हुआ, मैं अन्तिम बार जब इस सभा में आया था, तब भारत की राष्ट्रीयता के एक धुरन्धर अग्रदूत मेरी बगल में बैठे हुए थे। वे उस समय अपने भगवत्-निर्दिष्ट एकान्तवास से छूटकर आये थे। भगवान् की पवित्र वाणी सुनने के लिए ही उनके उस एकान्त कारागार की व्यवस्था हुई। आप लोगों में से सैकड़ों सहस्रों महाशय सम्मिलित होकर उनका स्वागत करने के लिए उपस्थित हुए थे। अब वे बहुत दूर, हमसे हजारों मील दूर पर विराज रहे हैं। मैंने एक वर्ष एकान्त में बिताया है। अब बाहर आकर देख रहा हूँ कि पहले की सभी बातें बदल गयी हैं। देश एक बड़े भारी तूफान से गुजर रहा है। एक सज्जन जो सदैव मेरे साथ रहते थे, मेरे हर काम में सम्मिलित होते थे; ब्रह्मदेश में देश निकाले की कैद झेल रहे हैं।"

श्री अरविन्द का प्रभाव

एक दार्शनिक के रूप में श्री अरविन्द ने भारतीय दर्शन को एक वैज्ञानिक पहचान दिलाने का अभूतपूर्व प्रयास किया, विश्व में उनके विचारों का व्यापक प्रभाव पड़ा हैं। श्री अरविन्द स्थान जाति, धर्म, अर्थ और रंग आदि किसी भी आधार पर मनुष्य-मनुष्य में भेद नहीं करते थे, वह विश्व -बन्धुत्व में विश्वास करते थे। उनके द्वारा स्थापित पुडूचेरी आश्रम में देश-विदेश से आए विभिन्न जाति और धर्मों के लोग रहते हैं, जो आर्थिक क्रियाओं के साथ ध्यान योग में संलग्न रहकर आध्यात्मिकता की ओर बढ़ते हैं। इससे भौतिकता और धर्म प्रधान समाज एवं संस्कृतित्व की दूरी कम होकर समाज से वर्गभेद समाप्त हो रहा है। श्री अरविन्द का दर्शन केवल भारतीय सीमा तक सीमित नहीं है। पुडूचेरी आश्रम की शाखाएं देश-विदेश में स्थापित हैं,

Siddhanta's International Journal of
Advanced Research in Arts & Humanities
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Impact Factor : 5.9, ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 6(1), July-August 2024
(Role of Bengal in Freedom Struggle of India - Special Issue)
Available online : https://sijarah.com/

जो पूरे विश्व में भौतिक एवं आध्यात्मिक जीवन के बीच समन्वय स्थापित करने की दिशा में प्रयत्नशील हैं। योग अब भूमण्डलीय विषय हो गया है। शिक्षा के क्षेत्र में श्री अरविन्द का कोई विशेष प्रभाव देखने को नहीं मिला। प्रारम्भ में इन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा आन्दोलन में भाग लिया था, जिसका प्रभाव कुछ ही वर्षों तक रहा। उसके बाद ये योग साधना में प्रवृत्त हो गए। कुछ वर्ष बाद इन्होंने अपने आश्रम में 'श्री अरविंद अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा केन्द्र' संस्था की स्थापना की, जिसमे मुक्त शिक्षा प्रणाली के अंतर्गत शिक्षा प्रदान की जाती है, जिसे सर्व साधारण की शिक्षा में लागू नहीं किया जा सकता।

मृत्यु

1926 से 1950 तक श्री अरविंद पुडूचेरी स्थित अरविंद आश्रम में सांसारिक कार्यों से विलग होकर तपस्या और साधना में लीन होकर आत्मा की खोज में लगे रहे और अंत में उन्हें परमात्मा से साक्षात्कार की अनुभूति हुई।उनके आध्यात्मिक अनुभवों से असंख्य लोग प्रभावित हुए। उनका दृढ़ विश्वास था कि संसार के दुःख का निवारण केवल आत्मा के विकास से ही हो सकता है, जिसकी प्राप्ति केवल योग द्वारा ही संभव है। वे मानते थे कि योग से ही नई चेतना आ सकती है। 5 दिसम्बर 1950 को श्री अरविंद की मृत्यु हो गई। कहते है कि निधन के बाद 4 दिनों तक उनके पार्थिव शरीर में दिव्य ज्योति बनी रहने के कारण उनका अंतिम संस्कार नही किया गया और अंतत: 9 दिसंबर को आश्रम में उन्हे समाधि दी गई।

निष्कर्ष

महर्षि अरविंद घोष एक बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति थे। वह एक स्वतंत्रता सेनानी, कवि, प्रकांड विद्वान, योगी और महान दार्शनिक थे। उन्होंने अपना जीवन भारत को आजादी दिलाने के लिए समर्पित कर दिया। भारत का स्वतंत्रता संघर्ष विभिन्न धाराओं की वैचारिकी और सांस्कृतिक चेतना की जागृति का प्रयास था। इस संघर्ष में भारतीयता की परम्परा के प्रमुख पोषकों में महर्षि अरविन्द ने अथक राष्ट्र साधना की। महर्षि अरविन्द सुन्दर, सुदृढ़ और समृद्ध और विकसित भारत चाहते थे। इसलिए श्री अरविन्द के दर्शन में एक मजबूत भारत के निर्माण की पर्याप्त संभावनाएं हैं। महर्षि की साधना के योग और आध्यात्म दो महत्वपूर्ण

Siddhanta's International Journal of
Advanced Research in Arts & Humanities
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Impact Factor : 5.9, ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 6(1), July-August 2024
(Role of Bengal in Freedom Struggle of India - Special Issue)
Available online : https://sijarah.com/

सोपान है और ये ही भारत के आधार स्तम्भ भी हैं। आज के भोगवादी संसार में इन्हीं दोनों का अभाव है। श्री अरविन्द के सपनों का आजाद भारत आध्यात्मिक स्वभाव के साथ भौतिक समृद्धि के वैभव वाला हो, ऐसी उनकी इच्छा थी। आजाद भारत विश्वगुरु की अपनी भूमिका का वरण कर मानव कल्याण करने वाला हो। ऐसे आजाद भारत की संकल्पना श्री अरविन्द के विचार-दर्शन की विरासत है।

संदर्भ सूची

1, राकेश राणा, महर्षि अरविंद घोष: आजादी की राष्ट्रवादी राह का पथिक (ब्लॉक)

2, मधुबनी ट्रीजा, शोधार्थी, मुरादाबाद, महर्षि अरविंद की दार्शनिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक विचारधारा का विश्लेषणात्मक अध्ययन (शोध पत्र)

3, कृपाकांत महर्षि, विश्व के महान योगी महर्षि अरविंद, बल्ली मारान, दिल्ली 2010

4 , अरविंद घोष, विकिपीडिया

5, अनिरुद्ध जोशी, महर्षि अरविंद घोष

6, प्रकाश चंद्र जोशी, अमर उजाला, दिल्ली, महर्षि अरविंद घोष जयंती जाने उनके जीवन से जुड़ी 10 बातें

7, अरविंदो घोष, भारतकोश

8, अरविंद घोष, हिंदी वेब दुनिया